ऊनी कंबल

फेरीदे वॉल्फ

ऊनी कंबल

फेरीदे वॉल्फ

बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच एक छोटा से गांव था जहाँ बाब्बा ज़ारहा रहती थीं. गांव के बच्चों को उनके पुराने, विशाल ऊनी कंबल पर आराम से बैठ कर उनकी कहानियाँ सुनना अच्छा लगता था.

एक दिन बाब्बा ज़ार्रहा ने देखा कि निकोलाई की एक जुराब में सुराख था. जब कहानी सुन कर बच्चे चले गए तो उन्होंने सोचा कि निकोलाई के लिए वह एक सुंदर, गर्म जुराब बुनेंगी. पर उस सर्दी में इतनी बर्फ पड़ चुकी थी कि ऊन देने के लिए कोई भी गांव न आ सकता था. ऊन के बिना वह जुराबें कैसे बुन सकती थीं?

“हर समस्या का कोई न कोई हल होता है,” बाब्बा ज़ार्रहा ने अपने आप से कहा. “मुझे बस थोड़ा सोचना होगा.”

इस समस्या का हल सोचने के लिए उन्होंने गिलास में मीठी चाय डाली और पीने लगीं. उन्होंने तीन घूंट चाय भी न पी थी कि उन्हें समाधान मिल गया. बाब्बा ज़ार्रहा जान गईं कि उन्हें क्या करना होगा.

“मैं कंबल से थोड़ी ऊन निकाल कर निकोलाई के लिए जुराबें बुन लूँगी!” उन्होंने मन ही मन कहा.

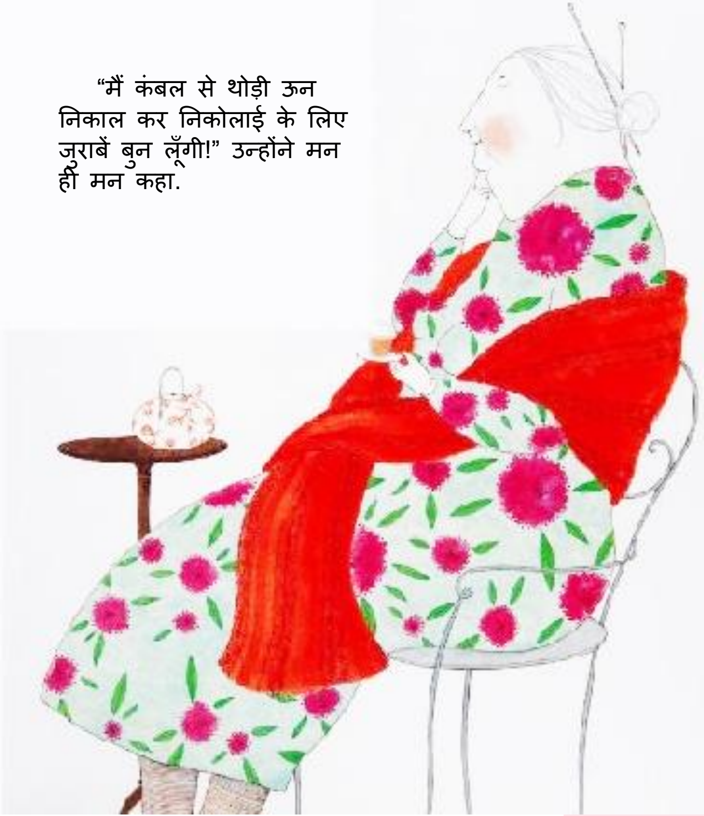

देर रात में जब सब सो रहे थे,
बर्फ में धीरे-धीरे चलती बाब्बा ज़ार्हा
निकोलाई के घर आईं और दरवाज़े
के पास उन्होंने जुराबें रख दीं.

कुछ दिन बाद, एक सुबह डाकिया जब डाक बांटने के लिए घर से निकला तो मेलबैग के ऊपर एक स्कार्फ लिपटा हुआ उसे मिला.

“क्या तुम जानते हो कि यह स्कार्फ किसने बुना है?” जो कोई भी उसे मिला, डाकिये ने उस व्यक्ति से पूछा.

पर किसी को भी इस बात की जानकारी न थी.

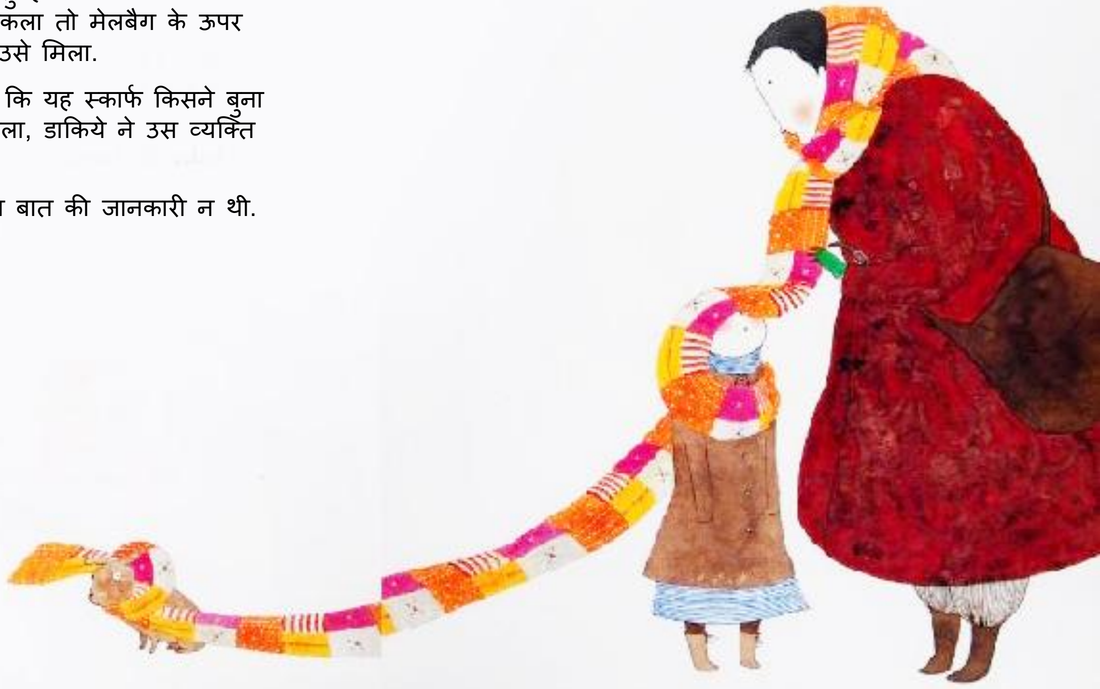

स्कूल के मास्टर जी जब स्कूल के लिए लकड़ियाँ लेने हेतु लकड़ियों के ढेर के पास आए तो वहाँ पर गर्म दस्तानों का जोड़ा देख कर वह आश्चर्यचकित हो गए.

मिसेज़ इवानोव ने धुले हुए कपड़ों पर बैठे कौवों को उस गर्म एपर्न को झटक कर उड़ाया जो उसे पानी के पंप के पास मिला था.

शीघ्र ही किराने की दुकान चलाने वाली औरत फटे, पुराने शाल के बजाय एक नया गर्म शाल ओढ़ने लगी थी.

बच्चे जब कहानी सुनने आते तो उन्हें ऊनी कंबल पर अब पास-पास बैठना पड़ता था.

दिन प्रतिदिन गांव वालों की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी. नन्ही ओलगा को एक नया, मुलायम बेबी कंबल मिला. कसाई ने भी अपने गंजे सिर पर पहनी सुंदर टोपी सब को दिखाई.

बाब्बा ज़ार्रहा के घर बच्चे अब छोटे से कंबल पर एक-दूसरे के साथ चिपक कर बैठते थे.

लोगों की उलझन और भी बढ़ गई जब दर्ज़ी की कमज़ोर, दुबली-पतली बिल्ली, एक आरामदायक गर्म कोट पहने, गुर्राते हुए दिखाई दी.

बच्चों के बैठने के लिए अब कोई कंबल न था.

गांव के लोगों ने अपने मेयर से कहा कि इस रहस्य को समझने में सहायता करें.

“तुम जानते हो कि बाब्बा ज़ारेहा हमेशा क्या कहती हैं,” मेयर ने कहा. “हर प्रश्न का एक उत्तर होता है.”

जब बच्चों ने जुराबें, स्कार्फ, दस्ताने, एपर्न, शाल, टोपी, बेबी कंबल और बिल्ली का कोट, सब एक साथ देखे तो वह एक साथ चिल्लाये, “यह तो बाब्बा ज़ारेहा के ऊनी कंबल जैसे लगते हैं.”

“लेकिन अब उनके पास कंबल नहीं है,” निकोलाई ने कहा.

“अहा,” मेयर ने कही, “बाब्बा ज़ारेहा ने अपने कंबल की ऊन से यह चीज़ें बनाई हैं. अब हमारी बारी है कि बाब्बा ज़ारेहा को हम आश्चर्यचकित करें.”

जब बाब्बा ज़ार्हा सो रही थी तब हर घर में हर कंबल को थोड़ा सा उधेड़ कर ऊन इकट्ठी की गई, जिसे बाब्बा ज़ार्हा के घर के दरवाज़े के पास रख दिया गया.

सुबह जब बाब्बा ज़ार्हा ने घर का दरवाज़ा खोला तो वह आश्चर्यचकित रह गईं. इतने रंगों की इतनी सारी ऊन उन्होंने एक साथ कभी न देखी थी.

ऊन के ऊपर लगाई एक तख्ती पर लिखा था:

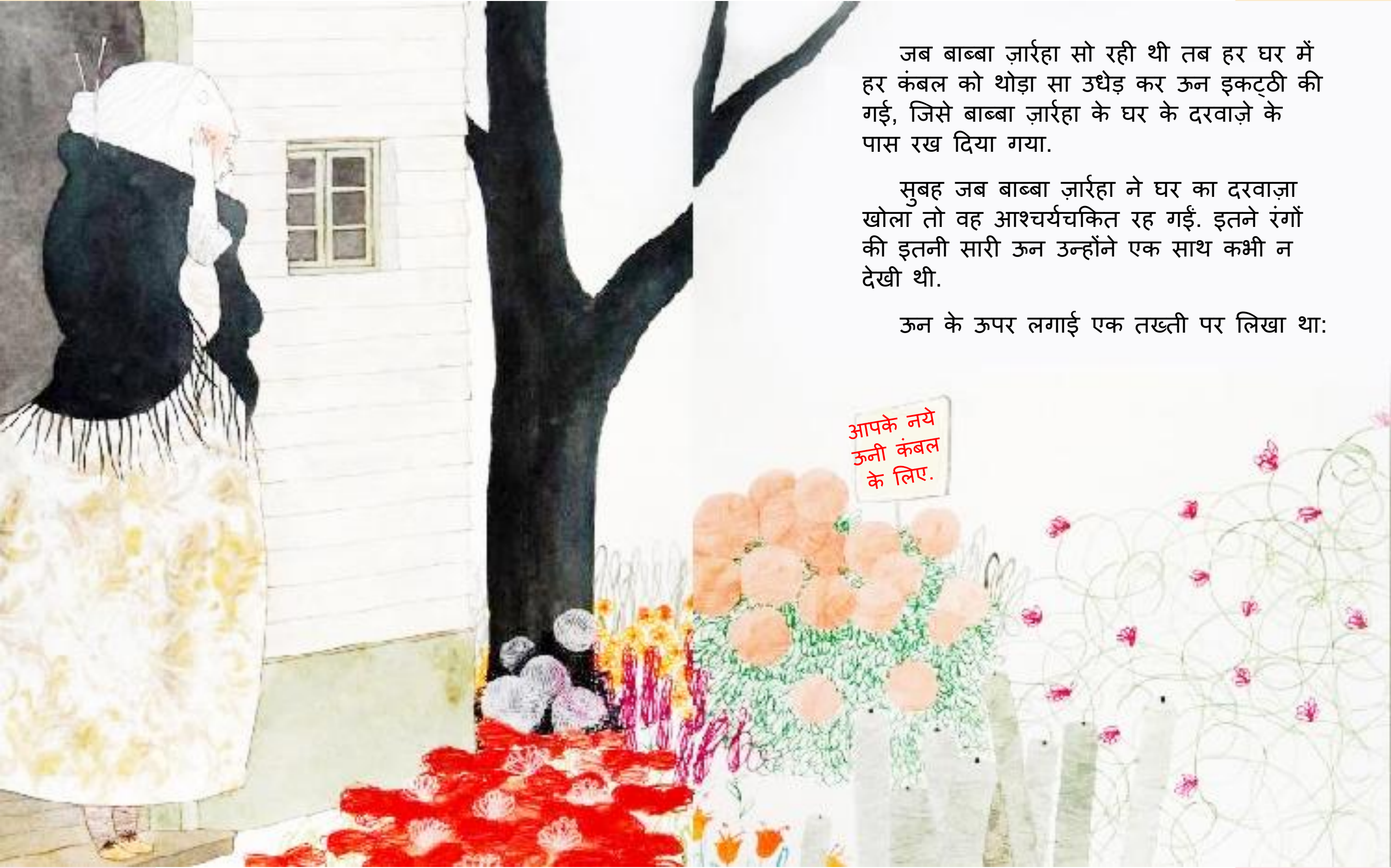

अगली बार जब बच्चे कहानी सुनने के लिए बाब्बा ज़ार्रहा के घर आए तो वहाँ उन्होंने एक नया, रंगबिरंगा कंबल देखा. उस पर बैठ कर उन्होंने उस गांव की कहानी सुनी जहाँ लोग अपनी वस्तुयें एक-दूसरे को बंटाते थे.

जब बच्चे वापस जा रहे थे, उस समय बाब्बा ज़ार्रहा ने देखा कि अलैक्ज़ैंडर के स्वेटर में एक सुराख था. वह अलैक्ज़ैंडर के लिए एक स्वेटर बना कर उसे आश्चर्यचकित कर देना चाहती थी. लेकिन पहाड़ियों पर अभी भी बहुत बर्फ थी और गांव में किसी के पास ऊन न थी.

बाब्बा ज़ार्रहा जानती थी कि हर प्रश्न के एक ऊत्तर होता है. उन्होंने अपने नये ऊनी कंबल को देखा और मुस्कराईं